International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030; Impact Factor: RJIF 5.24
Received: 16-01-2019; Accepted: 19-02-2019
www.advancedjournal.com
Volume 4; Issue 2; March 2019; Page No. 60-62

मिर्जापुर जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन

अजय कुमार सिंह[1], डॉ0 जय सिंह[2]

[1] शोध छात्र शिक्षा, अवधेश प्रताप सिंह वि.वि., रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

[2] प्राध्यापक शिक्षा, शासकीय शिक्षा महाविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश

इस शोध पत्र के द्वारा मिर्जापुर जिले के माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध क्षेत्र में 70.00 प्रतिशत प्राचार्य, 65.00 प्रतिशत शिक्षक, 58.75 प्रतिशत अभिभावक व 60.00 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि मिर्जापुर जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु समयवद्ध कार्यक्रम शासन द्वारा संचालित हो रहे है। शोध क्षेत्र में ग्रामीण शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है।

मूल शब्द : मिर्जापुर जिला, माध्यमिक शिक्षा स्तर, शिक्षक, शिक्षण कौशल, प्रशिक्षण।

1. प्रस्तावना

शिक्षा मनुष्य को अज्ञात तत्वों से परिचित कराकर उसे अनेक जटिल रहस्यों को समझने के योग्य बनाती है। अर्थात उसे ज्ञानवान, चिंतक, विचारक तथा अभिव्यक्ति की क्षमता से युक्त बनाती है। शिक्षा मनुष्य के उन सभी नैतिक आदर्शों को स्थापित करने का कार्य करती है, जो उसे सही अर्थों में सामाजिक प्राणी के रूप में मान्य करने हेतु आवश्यक है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि मनुष्य को मानव के रूप में परिवर्तित करने का कार्य शिक्षा ही करती है।

शिक्षक में शिक्षण कौशल का होना बहुत जरूरी है क्योंकि जब तक शिक्षक कुशल नही होगा तब सही प्रकार से शिक्षण कार्य नहीं कर सकेगा। कौशल विकास के लिए छात्राध्यापक सूक्ष्म पाठ योजनाएँ बनाकर शिक्षण कौशल को विकसित कर सकते हैं।

शिक्षक प्रशिक्षण उपरान्त कई तरही की समस्याओं को हल करने में सक्षम होता होता है। छात्र को मौके पर मुश्किल सवालों के जवाब देने, विद्यार्थियों के बीच संघर्ष को सुलझाने, पाठ योजनाओं को संशोधित करने और सहयोगियों के बीच मुद्दों से निपटने की आवश्यकता होती है। एक प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक जानता है कि इन प्रकार के सवालों को जल्दी और प्रभावी तरीके से हल करने के लिए कौन से संसाधनों का उपयोग करना है।

2. अध्ययन की आवश्यकता

शोधार्थी द्वारा प्रस्तुत शोध कार्य न केवल मिर्जापुर जिले वरन् सम्पूर्ण उत्तरप्रदेश के शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण प्रक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन के प्रयोग के समस्त संदर्भो तक किया गया है।

3. शोध की परिकल्पनायें

1. मिर्जापुर जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु समयवद्ध कार्यक्रम शासन द्वारा संचालित हो रहे है।
2. शोध क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है।

4. उद्देश्य

- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल को ज्ञात करना।
- माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षणों की जानकारी प्राप्त करना।

5. शोध समस्या का सीमांकन

5.1 भौगोलिक परिसीमनः प्रस्तुत शोध कार्य का क्षेत्र मिर्जापुर जिला है। इसके अन्तर्गत 4 तहसीले – चुनार, लालगंज, मारिहान एवं मिर्जापुर हैं। अतः जिला अन्तर्गत स्थित माध्यमिक शिक्षा स्तर द्वारा किये जाने वाले कार्य इस अध्ययन के अन्तर्गत सम्मिलित होगें।

5.2 विषयवस्तु का परिसीमनः अध्ययन की विषयवस्तु का परिसीमन, शिक्षा में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु प्रशिक्षणों के समस्त संदर्भो तक किया गया है।

6. शोध विधियाँ

शोध कार्य को संपूर्णता प्रदान करने हेतु कई प्रकार की शोध विधियों का उपयोग किया जाता है। शोध विधियों के मुख्य प्रकार ऐतिहासिक, वर्णनात्मक एवं प्रयोगात्मक है। शोध कार्य के अनुरूप प्रत्येक शोध विधि की अपनी विशेषताएँ एवं उपयोगिता है। शैक्षिक अनुसंधान की दृष्टि से प्रस्तावित शोध कार्य मुख्य रूप से सर्वेक्षणात्मक (वर्णनात्मक) होगा। प्रस्तावित अध्ययन में निम्नलिखित विधियों एवं उपकरणों का उपयोग किया जाएगा –

6.1 सर्वेक्षण विधिः प्राथमिक स्त्रोतों से प्रदत्तों के संकलन एवं पूर्व संचालित प्रदत्तो के सत्यापन हेतु शोध क्षेत्र के माध्यमिक शिक्षा स्तर के विद्यालयों का सर्वेक्षण किया गया है।

6.2 अवलोकन विधिः शोध अध्ययन के लक्ष्यों की प्राप्ति में शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति का पता लगाने हेतु न्यादर्ष के रूप में चयनित माध्यमिक

शिक्षा स्तर के विद्यालयों का अवलोकन किया गया है।

6.3 साक्षात्कार विधिः शोध क्षेत्र मिर्जापुर जिले में शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति की ज्ञात करने के लिए इस क्षेत्र में संलग्न शिक्षक, प्राचार्य तथा अभिभावकों से उनकी अभिवृत्तियों व वस्तुस्थिति का पता लगाने हेतु साक्षात्कार किया गया है।

6.4 सांख्यिकी विधिः प्रयुक्त शोध उपकरणों से प्राप्त प्रदत्तों के सारणीयन के उपरान्त आवश्यकतानुसार माध्य, माध्यिका एवं बहुलक, दो चरों में सार्थक अन्तर के आंकलन हेतु मध्यमान विचलन, टी–परीक्षण जैसी सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है।

7. न्यादर्श चयन

अनुसंधान तथा शोध के प्रयोग का प्रारूप न्यादर्श की प्रविधि पर आधारित होता है। एक उत्तम प्रकार के शोध कार्य में न्यादर्श तथा उसकी जनसंख्या संबंधी समस्त सूचनाओं को दिया जाता है। शोध कार्य को सार्थक करने के लिए न्यादर्श का चयन किया जाता है। चूंकि मिर्जापुर जिला का क्षेत्र व्यापक है, जिस कारण सभी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का अध्ययन करना संभव नही है, इसलिए जिले के सभी तहसीलो से 10–10 माध्यमिक विद्यालय कुल 40 विद्यालयों का चयन दैव निदर्शन विधि द्वारा अध्ययन हेतु लिया गया। माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण प्रक्रिया के क्रियान्वयन के परिणामस्वरूप पड़ने वाले प्रभाव का गहन अध्ययन करने के लिए न्यादर्श के रूप में चयनित विद्यालयों से 4–4 शिक्षक कुल 160 शिक्षक, अभिभावक तथा प्रत्येक विद्यालय से 20 छात्र व 20 छात्राएं कुल 1600 का चयन दैव निदर्शन पद्धति से साक्षात्कार किया गया।

8. पूर्ववर्ती शोध अध्ययनों का विवरण

किसी भी शोध कार्य को सोद्देश्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृष्टिकोण से यह आवश्यक हो जाता है कि शोधार्थी अपनी शोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य शोध कार्यों के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृष्टिकोण से शोधार्थी ने माध्यमिक स्तर पर शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु प्रशिक्षण की वर्तमान स्थिति पर किये गये कुछ प्रमुख तथा सहज रूप से उपलब्ध पूर्व शोध अध्ययनों के विषय–वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है। संक्षेप में उनका विवरण निम्न है – गौड़, प्रकाश (1999)[1], अग्रवाल (1999)[2], कल्पना (2004)[3], शर्मा (2004)[4], श्रीवास्तव, डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016)[5] सिंह तथा विवेक कुमार एवं डॉ. डी.एस. सिंह बघेल (2017)[6].

9. शोध क्षेत्र का परिचय

मिर्जापुर भारतीय राज्य उत्तरप्रदेश का एक जिला है। दिल्ली और कोलकता दोनों से लगभग 650 कि.मी., इलाहाबाद से 87 कि.मी. और वाराणसी से 67 कि.मी. दूर है। इसकी आबादी 2496970 है। यहाँ चार तहसीले – सदर, चुनार, लालगंज व मरिहान है।

10. परिणामों का विश्लेषण एवं व्याख्या :

शोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी शोध कार्य सही अर्थों में तभी प्रतिबिम्बित होता है, जब शोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय। इसके लिये यह आवश्यक है, कि शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त शोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीबद्ध किया जाय, निम्नानुसार है–

परिकल्पना क्रमांक –01: "मिर्जापुर जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु समयवद्ध कार्यक्रम शासन द्वारा संचालित हो रहे है।"

सारणी 1: मिर्जापुर जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु समयवद्ध कार्यक्रम शासन द्वारा संचालित हो रहे है का अध्ययन

क्र.	न्यादर्श	न्यादर्श में चयनित संख्या	माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु समयवद्ध कार्यक्रम शासन द्वारा संचालित					
			हो रहा है		नही हो रहा है		पता नही	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	प्राचार्य	40	28	70.00	02	5.00	10	25.00
2.	शिक्षक	160	104	65.00	20	12.50	36	22.50
3.	अभिभावक	160	94	58.75	30	18.75	36	22.50
4.	छात्र	1600	960	60.00	240	15.00	400	25.00
योग		1960	1186	60.51	292	14.90	482	24.59

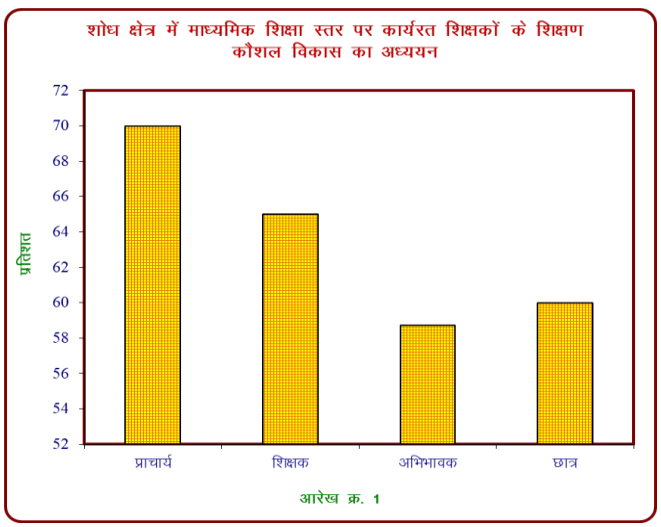

आरेख क्र. 1

सारणी क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 70.00 प्रतिशत प्राचार्य, 65.00 प्रतिशत शिक्षक, 58.75 प्रतिशत अभिभावक व 60.00 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि मिर्जापुर जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु समयवद्ध कार्यक्रम शासन द्वारा संचालित हो रहे है।

सारणी क्रमांक 1 में संकलित तथ्यों के विश्लेषण से स्पष्ट है कि 60.51 प्रतिशत इस बात से सहमत हैं कि मिर्जापुर जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु समयवद्ध कार्यक्रम शासन द्वारा संचालित हो रहे है। 14.90 प्रतिशत यह मानतें है कि मिर्जापुर जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु समयवद्ध कार्यक्रम शासन द्वारा संचालित हो रहे है, जबकि 24.59 प्रतिशत को मिर्जापुर जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु समयवद्ध कार्यक्रम शासन द्वारा संचालित हो रहे है, के सम्बंध में कुछ भी पता नही है।

अतः परिकल्पना क्र. 1 सत्यापित होती है।

परिकल्पना कमांक – 02 "शोध क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है।"

सारणी 2: शोध क्षेत्र में ग्रामीण व शहरी शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण में सार्थकर्ता हेतु सारणी

समूह		ग्रामीण	शहरी
समूह की संख्या (N)		80	80
मध्यमान (M)		59.25	65.13
मानक विचलन (SD)		13.49	14.10
क्रान्तिक निष्पत्ति (C.R.)		–2.69	
निष्कर्ष	0.05 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	
	0.01 सार्थकता स्तर पर	सार्थक अन्तर नही है	

df = (80-1) + (80-1) = 79+79 = 158

उपरोक्त सारणी क्रमांक 2 मे न्यादर्श में शोध क्षेत्र में ग्रामीण शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण सम्बधित प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में ग्रामीण शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण में सार्थकता का औसत उपलब्धि 59.25 है तथा मानक विचलन 13.49 है।

उपरोक्त सारणी क्रमांक 5.10 में न्यादर्श में चयनित शोध क्षेत्र में शहरी शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण के सम्बन्ध में प्रदत्त संकलित किये गये हैं। संकलित प्रदत्त प्राथमिक स्त्रोत पर आधारित है। उपरोक्त सारणी में संकलित प्रदत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण किया गया है। सांख्यिकी विश्लेषण से स्पष्ट है कि शोध क्षेत्र में शहरी शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण में सार्थकता का औसत उपलब्धि 65.13 है तथा मानक विचलन 14.10 है।

158 df पर सार्थकता के लिए 't' का मानक मान 0.01 विश्वास स्तर पर 2.58 तथा 0.05 विश्वास स्तर पर 1.96 है, जबकि अध्ययन से प्राप्त 't' का मान –2.69 है, जो कि दोनो विश्वास स्तरों के मानों से कम है। अतः शोध क्षेत्र में ग्रामीण शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है।

अतः परिकल्पना सत्यापित होती है।

11. निष्कर्ष

अनुसंधान के परिणामों से प्राप्त निष्कर्ष के आधार पर यह ज्ञात हुआ कि 70.00 प्रतिशत प्राचार्य, 65.00 प्रतिशत शिक्षक, 58.75 प्रतिशत अभिभावक व 60.00 प्रतिशत छात्रों का अभिमत है कि मिर्जापुर जिले में माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु समयवद्ध कार्यक्रम शासन द्वारा संचालित हो रहे है। शोध क्षेत्र में ग्रामीण शिक्षकों के शिक्षण कौशल विकास हेतु आयोजित प्रशिक्षण में कोई सार्थक अन्तर नही है।

12. संदर्भ

1. गौड़, प्रकाश : कम्प्यूटर अनुप्रयोग, रोजगार और नये आयाम, रोजगार और निर्माण, 14 अक्टूबर 1999.
2. अग्रवाल, अनिल : भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी , मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद, 2005.
3. कल्पना, राजाराम : भारत में विज्ञान प्रौद्योगिकी : स्पेक्ट्रम बुक्स प्रा. लि. जनकपुरी, नई दिल्ली, 2004.
4. शर्मा, ओ.पी. : ग्रामीण क्षेत्र में सूचना प्रौद्योगिकी, प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल 2004.
5. श्रीवास्तव, डॉ. छाया एवं डॉ. जय सिंह (2016) – "माध्यमिक शिक्षा स्तर पर कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण अधिगम क्षमता का अध्ययन (सतना जिले के संन्दर्भ में)" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2016; 1(3):63-65.
6. सिंह, विवेक कुमार एवं डॉ. डी.एस. सिंह बघेल (2017) – "किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि पर अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन" International Journal of Multidisciplinary Education and Research. 2017; 25(9):79-83.